कंचना कुमारी
अतिथि, शिक्षक, हिन्दी
यू. आर. कॉलेज, रोसड़ा

बी.ए. स्नातक, हिन्दी, प्रतिष्ठा
पार्ट II

(1) केदारनाथ अग्रवाल का प्रकृति-चित्रण व सौन्दर्य बोध।

केदारजी ने बुन्देलखंड और बुन्देलखंड की प्रकृति प्राकृतिक-परिवेश और जन-जीवन की धड़कनों और रंग भी है। विश्वनाथ प्रसाद मिश्र केदार की प्रकृति संबंधी कविताओं के आधार पर उनकी कविता को "प्रकृति के सान्निध्य में मुक्ति की तलाश" की कविता मानते हैं। आगे विश्वनाथ प्रसाद मिश्र लिखते है — "केदारनाथ अग्रवाल अपनी सौन्दर्य चेतना और सूक्ष्म चित्रण शक्ति के कारण प्रगतिवाद के दायरे को लांघ जाते है और अपना एक दूसरा काव्य-संसार भी उजागर करते है।"

केदार जी ने बुन्देलखंड की प्रकृति और प्राकृतिक परिवेश को सजीवतापूर्वक चित्रित किया है। अपने परिवेश तथा प्रकृति के प्रत्येक अंश से केदार जी का यह प्रेम जीवन के प्रति उनकी गहरी आसक्ति का सूचक है। प्रकृति के बारे में अपने विचार प्रस्तुत करते हुए वे कहते है - "प्रकृति में हम रहते है जो हमारे लिए माँ है - उसी को हमने अपने आज के साहित्य में निष्कासित कर दिया है और हम हो गए हैं प्रकृतिविहीन निःसंग आदमी। प्रकृति और जीवन से उत्पन्न हुआ करता है सौन्दर्य"।

Scanned with CamScanner

(2) केदार जी का प्रकृति चित्रण सामाजिक वास्तविकता और यथार्थ के अनुभव से विच्छिन्न नहीं है इसलिए वे गेहूं की फसल को लहलहाती देखकर हिम्मत लाल फौज को याद करते है –

"लाखों की अगणित संख्या में
ऊँचा गेहूं डटा खड़ा है
ताकत से मुट्ठी बांधे है
नोकीले भाले ताने है
हिम्मत वाली लाल फौज सा
मर मिटने को झूम रहा है।"

बुन्देलखंड की प्रकृति से कुछ नमूने –

"एक बीते के बराबर
एक हरा ठिगना चना
बांधे मुरेठा शीश पर
छोटे गुलाबी फूल का
सजकर खड़ा है"

केदार जी की कविता में प्रयुक्त प्राकृतिक उपादानों यथा नदी, धूप, पहाड़, बादल, बहता फसलें मिलकर जीवन का उत्साह, खुलापन उन्मुक्तता आदि व्यक्त करती है।

"धूप धारा पर उतरी
जैसे शिव के जटाजूट पर
नभ से गंगा उतरी"

Scanned with CamScanner

(3)

केदार जी की एक महत्वपूर्ण कविता है - "वसंती हवा" जिसमे मुक्ति की कामना बड़े ही उदात्त ढंग से व्यक्त की गई है -

"अनोखी हवा हूँ बड़ी बावली हूँ
बड़ी मस्तमौला नहीं कुछ फिकर है
बड़ी ही निडर हूँ जिधर चाहती हूँ
उधर घूमती हूँ मुसाफिर अजब हूँ
न घर बार मेरा न उद्देश्य मेरा
न ईर्ष्या किसी की न आशा किसी की
न प्रेमी न दुश्मन
जिधर चाहती हूँ उधर घूमती हूँ
हवा हूँ हवा मैं वसंती हवा हूँ

सरसो और फागुन उनकी कविता में एक साथ दिखाई देते है -

"और सरसों की न पूछो
हो गई सबसे सयानी
हाथ पीले कर लिए है
ब्याह मंडप पे पधारी
फाग गाता मास फागुन
आ गया है आज जैसे"

प्रेम और प्रकृति का सुन्दर समन्वय केदार जी की कविताओं में मिलता है -

Scanned with CamScanner

(4) "हे मेरी तुम
यह जो लाल गुलाब है खिला करेगा।
यह जो रूप है हँसा करेगा
यह जो प्रेम - पराग उड़ा है उड़ा करेगा

"हे - मेरी तुम
काले - काले छाये बादल उड़ जायेंगे,
गाँवो, खेतो मैदानों को तज जायेंगे।"

इस प्रकार केदार जी का प्रकृति - चित्रण, उनके प्राकृतिक परिवेश, स्थानियता, उनकी सामाजिकता विचारधार और यथार्थ बोध से, गहरे स्तर तक जुड़ा है।